2017 - 18

MAHAMUL03014/13/1/2012-TC
Special Issue No. 1, March 2018

ISSN : Online : 2320-8341
Print : 2320-6446

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

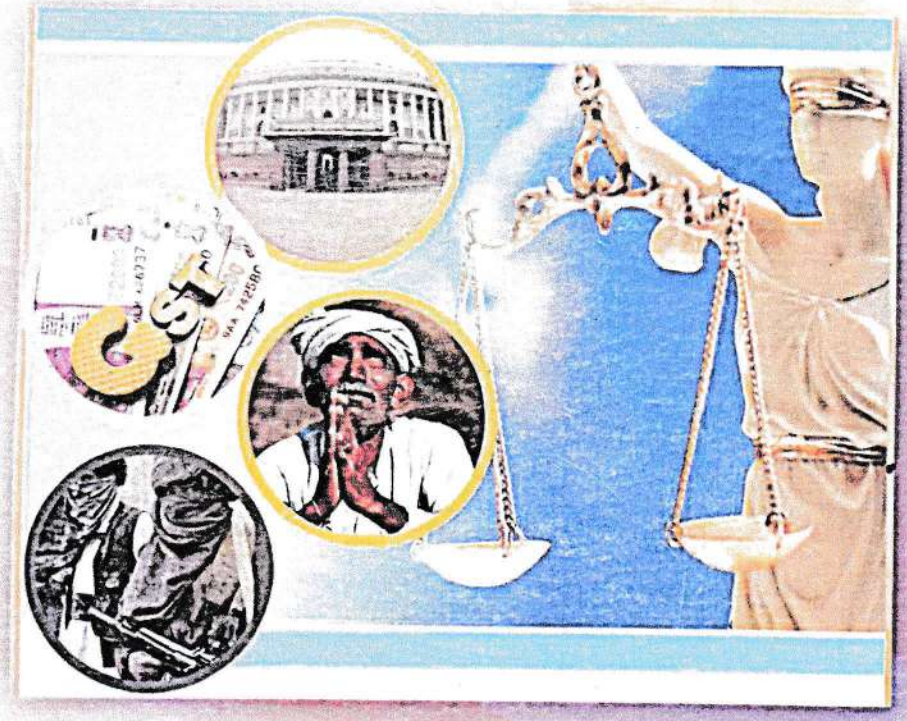

Social and Economic Justice- Past, Present and Future

Prin. Dr. C. J. Khilare
Chairman

Mr. S. M. Mahajan
Editor

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

CONTENTS

	Message From Principal's Desk	
	Editorial	
	Keynote address	
1	Social reforms and Justice with special reference to Abolition of Devadasi system and rehabilitation of devadasis **Adv. G. V. Naik-Nimbalkar**	1-5
2	Social Justice in Indian Constitution **Dr. B. M. Dahalake**	6-7
3	Indian Social Reformers in Relevance to Social Justice **Dr. D.D. Satpute**	10-13
4	A Study of Right to Education with Respect to Social Justice **Dr. H.V. Sankpal**	14-18
5	Contribution of Women to National Development: An Indian Perspective **Dr. Mrs. Desai M.B.**	19-24
6	"The Economic and Social Justice-A Conceptual View" **Dr. Mrs. S. A. Sabale**	25-27
7	Inequality in Sectoral Share in GDP and Sectoral Share in Employment in India **Dr. Smt. Pathak A. V.**	28-33
8	Gender Equality and Justice: A Critique **Mr. S.I. Barale**	34-39
9	Indian Constitution and Social Justice: **Prof. A. A.Gawade**	40-42
10	'Right To Education Act, It's Implementation And Awareness In Government And Non-Government Schools **Dr.Zunjarrao Kadam**	43-48
11	Social Justice And Social Reformers **Prof. M. N.Desai, Basargi P.N.**	49-56
12	Gender Equality and Justice: A Study "Problems of Women's for Seeking Education After Marriage " **Prof. Sakate C. B.**	57-60
13	The Minimum Wages Act (1948) & Its Implementation In India **Prof. Bansode G.S.**	61-65
14	Social justice and women **Dr. B. S. Puntambekar**	66-68
15	A Study of Green Marketing Impact on Business and Consumer **Prof. Warghade J. B.**	69-70
16	Obesity- A Threat: A Study of Young Adolescent Girls In North District of Goa. **Aparna Sanjay Porob Palyekar**	71-75
17	A Study of Girl Child Labour In Brick Kiln Industry With Special Reference To Karad Taluka of Satara District **Dr. Manisha Vinayak Shirodker**	76-81
18	Intellectual Property Rights In India : Patent **Prof. Rohini Girish Deshpande**	82-88
19	A Study on The Implementation of Reserve Seats for Disadvantaged and Weaker Sections Under Right to Education (RTE) Act 2009 Among English Medium Schools In Pune City. **Dr. Manisha Vinayak Shirodker, Shri. Bhaskar Vishnu Igawe**	89-92
20	A Study on "Relationship Between Mental Health & Emotional Intelligence Among The Rural And Urban Youths" **Dr. K.N Ranbhare**	93-100
21	Goods And Services Tax: One Nation One Tax **Dr. Rajamane Manjusha Ramesh**	101-105
22	Land Reforms : Social Justice **Mr. Sujit Manohar Kasabe**	106-109

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

23	Pre-Primary Education And Justice For Anganwadi Workers **Prof. Mrs. Shamala R. Mane**	110-113
24	Effect of Family Type And Gender on Emotional Maturity Among Undergraduate Students **Prof. Pramila A. Surve, Prof. Ramesh S. Kattimani**	114-118
25	Consumer And Consumer Protection Act ,1986 : Issues And Challenges **Smt. Sampada S. Lavekar**	119-123
26	Gender Inequality In India **Prof. Shobha Sambhoji**	124-125
27	हिंदी साहित्य में अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य **श्री काकासाहेब बापूसाहेब भोसले**	126-127
28	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के 'युधिष्ठिर' उपन्यास में प्रतिबिंबित धार्मिक एवं न्यायिक यथार्थता **देवकाते भागवत भगवान**	128-131
29	चित्रा मुद्गल के 'प्रतिनिधि कहानियों' में ग्राम्य और शहरी जीवन के विषमता का यथार्थ दर्शन **कांबळे श्रावण आबा**	132-134
30	नागार्जुन के काव्य में युगीन विषमता और सामाजिक आस्था एवं विश्वास के स्वर **लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील**	135-137
31	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर याची सामाजिक विकासाची मीमांसा **प्रा. डॉ. वासुदेव डोंगरदिवे**	138-146
32	महिला आरक्षणाचे राजकारण आणि स्त्रियांचा राजकीय सहभाग-समतेच्या संदर्भात **प्रा. सौ. सुपेकर व्ही. पी.**	147-150
33	'मूलभूत हक्क आणि सामाजिक न्याय' **प्रा. सुहास निर्मले**	151-153
34	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि पुणे करार : एक चिकित्सक अभ्यास **डॉ. विनोद संभाजी सोनवणे**	154-157
35	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान : 'स्त्री' च्या सामाजिक न्यायासाठी **डॉ. श्रीमती सिंधू जयवंत आवळे**	158-160
36	'राजा राममोहन रॉय यांनी सतेप्रथेविरूध्द मिळविलेला न्याय' **प्रा. डॉ. संतोष तुकाराम कदम**	161-164
37	महिलांना समान न्याय व पंचायत राज्यातील त्यांचे योगदान **प्रा. भाऊसाहेब खंडू सांगळे**	165-167
38	पंचायतराज व्यवस्थेमधून महिला सबलीकरण : एक सामाजिक न्याय प्रक्रिया **प्रा. सचिन शंकर ओवाळ**	168-170
39	भारतातील लिंग आधारित भेदभाव आणि न्याय **प्रा. रावसहेब सटवा कांबळे**	171-175
40	हिंदू स्त्रियांचे वैवाहिक हक्क आणि न्याय'' **प्रा. रजनी कारदगे**	176-178
41	मानवी हक्क आणि शिक्षण **प्रा. अडसरे व्ही. बी.**	179-181
42	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक न्याया बाबतचे विचार **प्रा. नदाफ बी. आर.**	182-183
43	आर्थिक कल्याण : सामाजिक न्यायाचा आधार **कुबेर दिनकर दिंडे**	184-187
44	विचारेमाळ झोपडपट्टीतील बालकामगार आणि सामाजिक न्याय **प्रा. कन्नाडे ममता कार्तिक**	188-191
45	शिवकालीन न्यायव्यवस्था **प्रा. डॉ. चंद्रकांत गिरी**	192-195
46	शिक्षणाचा अधिकार **प्रा. डॉ. गावडे एस. एम.**	196-201
47	अहमदनगर जिल्हयातील कम्युनिस्ट पक्षाचे जायकवाडी धरणग्रस्तांच्या लढयातील योगदान **प्रा. विधाटे गणेश शंकर**	202-208
48	पांगिरे प्रकरण (काशीबाई हणबर) **प्रा. डॉ. कोळसेकर मनोहर सुबराव**	209-210
49	शिक्षणाचा मुलभूत अधिकार आणि बालक हक्क धोरण **श्री अजितकुमार भिमराव पाटील**	211-220
50	स्त्रीः ''धर्म आणि न्याय'' **प्रा. डॉ. नंदिनी रविंद्र रणखांबे**	221-223
51	सामाजिक सुधारणा चळवळीचे अग्रदूत जगन्नाथ शंकरशेट **प्रा. उमेश गणेशराव जांभोरे**	224-227
52	जागतिकीकरण व न्यायः काही निरीक्षणे **प्रा. टी. वाय.रणदिवे**	228-230

RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

हिंदी साहित्य में अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य
(संवेदना के कवि सर्वेष्वर दयाल सकसेना के संदर्भ में)

श्री. काकासाहेब बापूसाहेब भोसले
रा. छ. शाहू कॉलेज, कदमवाडी,
कोल्हापूर.

"अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलती नही. वह मांगी नहीं जाती, उसके लिए लडा जाता है, रचनाकार के जीवन में यही एक लडाई है जो सर्वाधिक मूल्यवान है, यह उसके अस्तित्व की लडाई है यह नही तो वह नहीं है और न ही उसकी रचना है। कवि सर्वेश्वर ने हिंदी साहित्य जगत में अपने अस्तित्व को बनायें रखने के लिए प्रखर विचार और अंतरतम की सोच को अभिव्यक्ति दी है।

सर्वेश्वर एक व्यापक जीवन दर्शन को लेकर काव्य जगत के अखाडे में उतर गए थे। उनकी कविता कसीदाकारी या बेला बूटटों की नक्काशी न होकर अकथित सत्यों की प्रेरणा से जन्मी है। पेट की अंतडियॉ को भूख से मरोड उठने और अभावों की आग में झूलसने से उत्पन्न हुई है। **तीसरे सप्तक** के वक्तव्य में सर्वेश्वर दयालजी अपने साहित्य निर्माण की लाचारी और विवशता अभिव्यक्त करते है। उनकी कविता में राजनीतिक षड़यंत्र, उथलपुथल, सत्ताधीशोंकी मदांधता, समकालीन सामाजिक जीवन के विविध आयाम, लोकतंत्र, संसद जीवन में व्याप्त भूख, विवशता, लाचारी, पीड़ा, मध्य और निम्नमध्य वर्ग के जीवन के विविध पहलू , अन्याय–अत्याचार के विविध प्रकार और संदर्भ दिखाई देते है। परंतु इस के साथ प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति के विविध चित्र अनकी कविता के अंग बने है। सर्वेश्वरजी ने उपर्युक्त वास्तव, जटिल विषयोंको कविता में अभिव्यक्त करते समय अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने का दृढ संकल्प किया था।

कवि के विषयों की परिधि भी अत्यंत व्यापक है। जैसे **यहीं कहीं एक कच्ची सड़क थी** में शहरीकरण से आक्रांत ग्रामों का चित्रण और प्राचीन के प्रति आस्था व्यक्त हुई है। **जब–जब सिर उठाया** में परंपरागत राजनीति, सामाजिक चौखट के विरोध में आवाज उठाने पर अपने पछतावे की पीड़ानुभुति को वाणी दी है। **प्यार; एक छाता** में विपत्ति के समय शरण देनेवाले प्रेमरूपी छाते का जिक्र है जो प्रेम विषयक अनोखे दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। **एक सूनी नाव** में कवि का अकेलापन और अकेलेपन की सार्थकता अभिव्यक्त है।

लीक पर वे चले कविता में जहॉ एक ओर परंपरा के प्रति विद्रोह है वहीं दूसरी ओर अपने प्रति आत्मविश्वास एवं ईमानदारी अभिव्यक्त हुई है। **प्रार्थना २** में सर्वेश्वर के स्वाभिमानी, कर्मठ एक दृढ संकल्प चरित्र का परिचय होता है। **भूख** कविता में भूख से लडनेवालों मे कविने सौंदर्य के दर्शन किए है। **काला तेंदुआ** सत्तापिपासु, तानाशाही लोगों का चित्रण करती है। **नीली चिडियॉ** में कवि के संवेदनशील प्रेम जनित मनोभाव व्यक्त हुए है और **शाम: एक किसान** में प्रकृति का अनोखा रूप प्रस्तुत है।

यही कही कच्ची सडक थी कविता में सम्मोहन की स्थिति है। ग्रामीण जीवन पर शहरी सभ्यता का रंग चढा हुआ दिखाई देता है। डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल लिखते है कि, हम अपने युग की मनोदशाओं, मनोभूमिकाओं, समस्याओं, चिंताओं, विसंगतियॉ, विद्वताओ, विडम्बनाओं, श्रम के पराये पर, अवमानवीकरण को सर्वेश्वर वाणी देता है। कविता में ग्रामीण परिवेश कें धुंधले होते जाने और नागरीय परिवेश के उभरते जाने से कवि व्यंग करते है।

"किसने कहा कि वहं चट की साईन बोर्ड
यहॉ हर माल सस्ता मिलता है।
भडकीले रेस्ट्रॉ, काफी हाऊस, सिनेमा,
क्लब, थियेटर, फैषन की दुकानों पर घुमें।"

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

प्रेम और सौंदर्य कवि की अनुभूतियों की तरह ही सर्वेश्वर के प्रिय विषय है। **प्यार एक छाता** में कवि का प्रेमिल मन अनुभूतियों की आर्द्रता लिपिबद्ध करता है। इसमें आंतरिकता और भावुकता भी है।

"वर्षा से बचकर। कोने में कही टिका दो,
प्यार एक छाता है। आश्रय देता है, गीला होता है।" पृ. १४४

उनके प्रेम में भोग महत्वपूर्ण है। वे प्रेम को न केवल जिंदगी के लिए अनिवार्य समझते है, उसे पूरी तरह भोगना भी चाहते है। इस भोगी की शुरूआत **एक सुनी नाव** से होती है।
"नीली चिडियाँ कविता में भी रोमांस युक्त भावुकता है –

तुम्हारी आँखो से उडी नीली चिडियाँ
मेरे खुलते अधरों पर बैठ जाती है।"
..... शब्द चुगने लगती है। .....
..... तुम्हारी आँखो में चली जाती है।" पृ. १४८

सर्वेश्वर दयाल के जीवन में वैचारिक संवेदना का विकास रोमानी, कटु–तिकत, अंतर–बाहय, संघर्ष, असफलता, बैचेनी से हुआ है। वें किसी की परवाह न करते हुए संघर्षो का सामना करते हुए विश्वास और संकल्प के साथ आगे बढते है। उनके काव्य में भूख, भ्रष्टाचार, तथा शोषण का चित्रण है। **भूख** इस कविता में उनके विचार है "अपनी भूख मिटाने के लिए बाज आहार पर झपटता है, साँप फन उठा लेता है, बकरी दो पैरों पर खडी होकर तनी पत्तियाँ खाती है, चीता दबे पाँव झाडियों में चलता है, और तोता डाल पर उलटा उलटकर भी फल खाता हुआ अपनी भूख मिटा लेता है। तो फिर ऐसा क्या है कि आदमी अपनी भूख नहीं मिटा पाता। अत: भूख मिटाने के लिए संघर्ष करना जरूरी है। कवि के शब्दों मे – " जब भी । भूख से लडने।

"कोई खडा हो जाता हैं। सुंदर दिखने लगता है।
झपटता बाज। या इन सब की जगह आदमी होता। "

डॉ. धनंजय वर्मा इस पर प्रकाश डालते है सर्वेश्वर दयाल सकसेना वैचारिक उत्तेजना और प्रतिक्रियाओं के कवि है।"

काला तेंदुआ शीर्षक कविता में मदान्ध सत्ताधीशो की मनमानी और सारे देश को अपने काले कारनामों से लंगडा बना देनेवाली षडयंत्रकारी नीतियों का पर्दापाश किया गया है। आपातकालीन 'काला तेंदुआ' कविता में संकेत दिया है कि एक काला तेंदुआ (सत्ता) सारे माहौल को ही अपने रंग में ढाल रहा हैं जैसे –

"यहाँ हर माल सस्ता मिलता है।"

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि सर्वेश्वरजी का काव्य समय, समाज, स्थिति, परिवेश से जुडा है। विशेषत: स्वातंत्र्योत्तर भारत की जो सुख–सुविधाए, समस्याएँ, वैज्ञानिक बोध, आपत्तियों, चुन्नोतियों के प्रति सर्वेश्वर की कलम जाग्रत रही है। अपने परिवेश और जीवन कों गहराई से भोगकर बैचेनी का अनुभव करते है। उनकी कविता हमारे समय की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों की यथार्थ और प्रामाणिक अभिव्यक्ति बनकर आयी है। कहीं सत्तापर, कहीं सत्ताधीशोंपर, कहीं जीवन के तनावों पर कहीं जीवन, समाज और शासन की रीति–नितियों पर सर्वेश्वर ने अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति दी है। भेडियाँ, साँप, काला तेंदुआ जैसे प्रतीकों से कविने व्यवस्था के कर्णधारो की नियत और भ्रष्टाचारी वृत्तियों को खुलकर अभिव्यक्ति दी है।

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, एक सूनी नॉव
२. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कुआनों नदी
३. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल अंतरंग, साक्षात्कार
४. डॉ. धनंजय वर्मा आस्वाद के धरातल: